भजन

तर्ज– मंगल भव अमंगल हारी

निसदिन राजश्यामा श्याम श्यामा कहिए

जेही विध राखे धनी तेहि विध रहिए

1–न शोहरत ना चाहे बड़ाई, बस चरण में तिहारे आई

राजश्यामा श्याम

2–श्री मुख से श्री जी फुरमाए, प्रेम के बस में प्रीतम आए

राजश्यामा श्याम

3–वाणी में भरपूर खजाना, इस सागर मे गोते लगाना

राजश्यामा श्याम

4–केते गुण पिया तेरे गायें, पल पल पिया गुण बढ़ते जायें

राजश्यामा श्याम

5–प्रेम का जग में मोल न कोई,सांच के आगे बोल न कोई

राजश्यामा श्याम

6–अंखड वाणी धाम से आई, आत्म मेरी इसने जगाई

राजश्यामा श्याम

7–इस वाणी का स्वाद निराला, पट खोलें है कर दे उजाला

राजश्यामा श्याम

8–जब तक आतम नही जगेगी, मेरी फेरी लगी रहेगी

राजश्यामा श्याम

9–साथ चलो न देरीं लगायें,प्रीतम सब सैयंन को बुलायें

राजश्यामा श्याम